ओ३म्



# सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थमाला

समुल्लास 15 पर आधारित

## सत्य का अर्थ और प्रकाश

प्रकाशक : आर्य समाज, अजमेर मूल्य 3.00

Scanned with CamScanner

# प्राचार्य दत्तात्रेय वाब्ले (आर्य) द्वारा संपादित सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थमाला के 15 पुष्प

| भाग | नाम | लेखक का नाम | मूल्य |
|---|---|---|---|
| 1. | ईश्वर एक नाम अनेक | प्रो. बुद्धि प्रकाश आर्य | 3(0) |
| 2. | आदर्श माता–पिता | प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु | 3(0) |
| 3. | शिक्षा और चरित्र निर्माण | प्रो. भूदेव शास्त्री | 4(0) |
| 4. | गृहस्थाश्रम का महत्त्व | आचार्य ओंकार मिश्र प्रणव | 3(0) |
| 5. | संन्यासी कौन और कैसे हो ? | रासासिंह विद्यावाचस्पति | 3(0) |
| 6. | राज्य व्यवस्था | प्रो. प्रशान्त कुमार वेदालंकार | 55(0) |
| 7. | ईश्वर और वेद | डॉ. सूर्यदेव शर्मा, डी. लिट् | 4(0) |
| 8. | जगत् की उत्पत्ति | डा. स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती | 4(0) |
| 9. | स्वर्ग और नरक कहाँ है ? | पं. यशपाल, आर्य बन्धु | 4(0) |
| 10. | क्या चौके चूल्हे में धर्म है ? | प्रो. देव शर्मा वेदालंकार | 3(0) |
| 11. | हिन्दू धर्म की निर्बलता | प्रो. भवानीलाल भारतीय | 4(0) |
| 12. | बौद्ध और जैन मत | पं. मंजुनाथ शास्त्री | 3(0) |
| 13. | वेद और ईसाई मत | श्री रामस्वरूपजी रक्षक | 3(0) |
| 14. | इस्लाम और वैदिक धर्म | डा. श्रीराम आर्य | 4(0) |
| 15. | सत्य का अर्थ तथा प्रकाश | प्राचार्य दत्तात्रेय वाब्ले | 3(0) |

## आचार्य दत्तात्रेय जी आर्य द्वारा लिखित पुस्तकें

| | | |
|---|---|---|
| 1. | आचार संहिता | 1(0) |
| 2. | आर्य समाज हिन्दू धर्म का सम्प्रदाय नहीं | 50(0) |
| 3. | हमारी राष्ट्रीयता का आधार | 2(0) |
| 4. | देश धर्म और हिन्दू समाज को आर्य समाज की देन | 1(0) |
| 5. | मेरी तीसरी विदेश यात्रा के संस्मरण | 6(0) |
| 6. | आर्य शिक्षण संस्थाओं का भविष्य | 5(0) |
| 7. | दा आर्य समाज (The Arya Samaj) | 2(0) |
| 8. | आर्य शिक्षण संस्थाओं की परिचय निर्देशिका | 12(0) |
| 9. | आर्य समाज का वर्तमान और भविष्य | 10(0) |
| 10. | The Arya Samaj Hinduwithout Hinduism | 125(0) |
| 11. | आर्य समाज के पुनर्गठन की आवश्यकता | 8(0) |
| 12. | कर्मवीर पं. जियालाल का संक्षिप्त जीवन चरित्र | 5(0) |

## अन्य प्रकाशन

| | | |
|---|---|---|
| 1. | आर्य समाज अजमेर का इतिहास | 50(0) |
| 2. | सांस्कृतिक कार्यक्रम पथ दर्शिका | 30(0) |
| 3. | अजमेर की आर्य शिक्षण संस्थायें | 3(0) |
| 4. | धर्म शिक्षा (भाग 1 से 11 तक) सैट (20% कमीशन) | 100(0) |
| 5. | सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ माला (सैट) (20% कमीशन) | 20(0) |

प्राप्ति स्थान आर्य [illegible]

Scanned with CamScanner

ओ३म्

सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थमाला—भाग १५

# सत्य का अर्थ और प्रकाश

लेखक :

**दत्तात्रेय (वाब्ले) आर्य**

पू. प्रिंसिपल, दयानन्द स्नातकोत्तर कॉलेज, अजमेर

प्रकाशक : **आर्य समाज, अजमेर**

चर्तुथ संस्करण
वर्ष 1999 | प्रतियाँ 2000 | मूल्य : 3.30 पैसे

Scanned with CamScanner

# डॉ. सूर्यदेव शर्मा

आर्य समाज के जाने माने विद्वान् और प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री तथा आर्य समाज अजमेर के दीर्घ कालीन यशस्वी मंत्री डॉ. सूर्यदेव शर्मा, शास्त्री, साहित्यालंकार, एम.ए., एल. टी., डी. लिट् ने 1981 में सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी के अवसर पर इस ग्रन्थ माला के प्रथम संस्करण के लिये 12 हजार रुपये तथा आर्यसमाज अजमेर की 1982 में शताब्दी के उपलक्ष्य में प्रकाशित द्वितीय संस्करण के लिए 10 हजार रुपये,इस प्रकार कुल 22 हजार (बाईस हजार रुपये) रुपये की राशि दान में देकर ऋषि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार में अनुकरणीय सहयोग दिया है। आर्य समाज अजमेर और मैं अपनी ओर से उनका हार्दिक अभिनन्दन करता हूँ।

**दत्तात्रेय (वाब्ले) आर्य**
प्रधान
आर्य समाज, अजमेर

मुद्रक : श्री आर्य प्रिण्टर्स, केसर गंज, अजमेर
दूरभाष : 431464, 424850

Scanned with CamScanner

# प्रस्तावना

स्वामी जी के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का धार्मिक क्रान्ति के इतिहास में एक विशिष्ट स्थान है। सत्यार्थप्रकाश शताब्दी के अवसर पर आर्य समाज अजमेर ने इसलिये यह निश्चय किया कि सत्यार्थ प्रकाश का अधिक से अधिक प्रचार और प्रसार करने की दृष्टि से उसके चौदहों समुल्लासों पर आर्य जगत् के जाने माने विद्वानों से सरल भाषा में तथा आधुनिक दृष्टिकोण से पुस्तिकाएं प्रकाशित की जावें, जिनमें स्वामीजी द्वारा प्रतिपादित विषय का स्वतन्त्र रूप से विवेचन किया गया हो। यह पन्द्रहवीं पुस्तिका इस ग्रन्थमाला के परिशिष्ट के रूप में प्रकाशित की जा रही है, जिसमें उपरोक्त समुल्लासों के अतिरिक्त स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका तथा स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश में जो विचार व्यक्त किये हैं, उनका परिचय दिया गया है।

मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि आर्य समाज अजमेर का यह निश्चय इस प्रकार सफलतापूर्वक कार्यान्वित किया जा रहा है। इन पुस्तिकाओं के लेखन में जिन विद्वानों ने सहयोग दिया है, उन सबको आर्य समाज की ओर से मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। समुल्लासों के अनुसार इन विद्वान् लेखकों के नाम निम्न प्रकार है :—

(1) प्राध्यापक श्री बुद्धिप्रकाश जी आर्य (2) प्राध्यापक श्री राजेन्द्र जिज्ञासु (3) प्राध्यापक श्री भूदेव शास्त्री (4) आचार्य ओंकार मिश्र प्रणव शास्त्री (5) प्रधानाचार्य श्री रासासिंह (6) प्राध्यापक डॉ. सूर्यदेव शर्मा (8) प्रोफेसर डॉ. स्वामी सत्यप्रकाश, डी.एस.सी. (9) सत्यार्थ भास्कर श्री यशपाल आर्य बन्धु (10) प्राध्यापक श्री देव शर्मा (11) प्रोफेसर डॉ. भवानीलाल भारतीय (12) भूतपूर्व प्रधानाध्यापक श्री मञ्जुनाथ शास्त्री (13) डॉ. श्रीराम आर्य।

सत्यार्थप्रकाश शताब्दी समारोह का आयोजन उदयपुर में गत वर्ष अक्टूबर में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से संयुक्त रूप से किया गया था। आर्य समाज अजमेर ने उसमें जो यथाशक्ति सहयोग दिया उसके अतिरिक्त 75,000 की संख्या में प्रकाशित इन पुस्तिकाओं पर करीब 50,000 रु. की बड़ी राशि भी व्यय की गई थी। "आर्यसमाज की देन" नामक पुस्तिका की 12,000 प्रतियाँ इसके अतिरिक्त हैं।

आर्य समाज के मन्त्री श्री रासासिंह ने पत्राचार, ब्लॉक बनवाने छपवाने तथा मुद्रण में जो सहयोग दिया है तथा दयानन्द कॉलेज के प्राध्यापक श्री बुद्धिप्रकाशजी आर्य, श्री देव शर्मा जी, आचार्य गोविन्दसिंह, श्री वीरेन्द्र जी ने छपाई और प्रूफ देखने में सहायता दी है, ये सब धन्यवाद के पात्र हैं।

**दत्तात्रेय आर्य**

**सम्पादक**

Scanned with CamScanner

।। ओ३म् ।।

# सत्य का अर्थ और प्रकाश

सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी के अवसर पर प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश के प्रत्येक समुल्लास पर 14 पुस्तिकाओं की इस ग्रन्थमाला की यह 15वीं किन्तु प्रारम्भिक मणि है। सत्यार्थ प्रकाश के अन्त में स्वामी जी ने स्वमन्तव्यामन्तव्य के नाम से अपनी वैदिक मान्यताओं का विवेचन किया है। वह एक प्रकार से सत्यार्थ प्रकाश के चौदह समुल्लासों में किये गये सत्यासत्य के विवेचन का उपसंहार है। इसे सत्यार्थ प्रकाश का सार कहा जाये तो अनुपयुक्त नहीं होगा।

इस माला की अन्य 14 मणियों का इस लघु पुस्तिका में जहां प्रतिपादित अन्य विषयों का संक्षिप्त विवेचन है वहीं सत्य का आग्रह और असत्य का निराकरण स्वामी जी के जीवन और कार्यों का जो मुख्य लक्ष्य रहा है उसका भी निर्वचन है जैसा आर्य समाज के चौथे नियम में उन्होंने कहा है। सत्यार्थ प्रकाश की प्रारम्भिक भूमिका में स्वामी जी ने लिखा कि "मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्यासत्य अर्थ का प्रकाश करना अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादित करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश किया जाये। किन्तु **जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य है**"—सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम दस समुल्लासों में धार्मिक तथा सामाजिक जीवन का आधार जिन मूल्यों पर आधारित

Scanned with CamScanner

होना चाहिये उनका विवेचन और अन्तिम चार समुल्लासों में उन्होंने असत्य के निराकरण के लिये हमारा मार्ग दर्शन किया है। अन्त में "स्वमन्तव्यामन्तव्य" में उन सिद्धान्तों का संक्षिप्त विवरण हैं जो उस वैदिक धर्म के आधार हैं, जिसके प्रचार और प्रसार के लिये स्वामी जी ने आर्य समाज की स्थापना की थी।

## धार्मिक क्रान्ति

जैसा मैंने अन्यत्र निवेदन किया है कि धार्मिक जगत् में सत्यार्थ प्रकाश का लगभग वही स्थान है जो उसके समकालीन कार्ल मार्क्स के प्रसिद्ध ग्रन्थ "डास कापिटाल" अर्थात् पूंजी यानी केपिटल नामक ग्रन्थ का है। आर्थिक व राजनैतिक क्षेत्र में जो स्थान उसके द्वारा प्रतिपादित मेटेरियलिस्टिक इन्टर प्रेटेशन आफ हिस्ट्री अर्थात् इतिहास के आर्थिक विश्लेषण नामक सिद्धान्त का है, ऋषि दयानन्द के तर्क और बुद्धि के सिद्धान्त का वही स्थान धार्मिक तथा आध्यात्मिक क्षेत्र में है।

## एक नवीन जीवन दर्शन

आज के वैज्ञानिक युग में ईश्वर और धर्म के प्रति अविश्वास का कारण उनके नाम पर प्रतिपादित अन्धविश्वास और प्रचलित निरर्थक रीति रिवाज हैं। आर्य समाज के रूप में ऋषि दयानन्द ने हमें एक ऐसा जीवन दर्शन दिया है जो हमारी आध्यात्मिक शांति, मनोवैज्ञानिक जिज्ञासा तथा जीवन की व्यवहारिक आवश्यकता को सन्तुष्ट करता है और साथ ही शाश्वत सत्यों के आधार पर प्रगति का मार्ग भी खुला रखता है। उनके द्वारा प्रतिपादित यह जीवन दर्शन या धर्म, सरल, सीधा सादा सबके लिये समान रूप से साध्य और तर्क विहीन विश्वासों और कर्मकाण्डों से मुक्त है। उसकी विशेषताएँ निम्न प्रकार हैं जिनमें प्रथम तीन त्रैतवादी दर्शन अर्थात्

Scanned with CamScanner

ईश्वर, जीव और प्रकृति के पृथक् अस्तित्व पर आधारित हैं और अन्तिम तीन में व्यक्ति और समाज के अभ्युदय का विवेचन है। ये सिद्धान्त निम्न प्रकार हैं :–

1. ईश्वर कोई व्यक्ति नहीं बल्कि एक निराकार चेतन शक्ति है।
2. आत्मा अनादि और अमर है किन्तु कर्म करने में वह सर्वथा स्वतन्त्र हैं। स्वस्थ तथा सम्पन्न शरीर उसका आवश्यक साधन है।
3. स्थूल जगत् या प्रकृति का भी अस्तित्व पृथक् और अनादि है।
4. कर्म और उसका परिणाम पुनर्जन्म है किन्तु उनका आधार भाग्य या केवल ईश्वर इच्छा न होकर पुरुषार्थ और कर्म की स्वतन्त्रता है।
5. सब प्रकार की समानता पर आधारित व्यक्तिगत और सामाजिक कल्याण एक दूसरे के पूरक हैं।
6. ईश्वर और मनुष्य के बीच में किसी पैगम्बर, गुरु या मसीहा अथवा दूत की मध्यस्थता या उपयोगिता की आवश्यकता नहीं है।

## स्वमन्तव्यामन्तव्य

यह जीवन दर्शन उस सार्वभौम वैदिक धर्म पर आधारित है जो स्वयं ऋषि दयानन्द के शब्दों में–"वेदादि सत्य शास्त्र और ब्रह्मा से लेकर जैमिनी पर्यन्त सब को मान्य है और जिनको मैं भी मानता हूं।" प्रारम्भिक भूमिका में स्वामी जी ने इसी को "आर्यों का सनातन, वेद विहित मत कहा है" अन्तिम अध्याय में स्वामी जी ने एक और महत्त्वपूर्ण और ऐतिहासिक घोषणा, की है। वे कहते हैं कि "मेरी कोई नवीन कल्पना या मत–मतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है, किन्तु जो सत्य है उसको मानना मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़ाना मुझ को अभीष्ट है" किन्तु ऋषि की

Scanned with CamScanner

उस उदार घोषणा का यह अर्थ लगाना सर्वथा भ्रमोत्पादक है कि उनके द्वारा प्रतिपादित यह वैदिक धर्म वर्तमान हिन्दू धर्म का ही केवल सुधरा हुआ संस्करण है। स्वमन्तव्य में उन्होंने जिन मान्यताओं की घोषणा की है वह उनकी अपनी सृष्टि या कल्पना न होकर प्राचीन वैदिक धर्म पर ही आधारित है। यह सही है और यही बात स्पष्ट करने के लिये उन्होंने उपरोक्त घोषणा की है, किन्तु इसका यह अर्थ कैसे किया जा सकता है कि उनके यह मन्तव्य वर्तमान हिन्दू धर्म से भिन्न भी नहीं है ?

## नवीन नहीं किन्तु भिन्न

नवीन होना दूसरी बात है और भिन्न होना दूसरी बात है। यदि नवीन न होने का अर्थ यह किया जाये कि वह वर्तमान हिन्दू धर्म से भिन्न भी नहीं है तो यह स्वामी जी को खुली चुनौती देना है। ऐसी स्थिति से सत्यार्थ प्रकाश और विशेष कर उसके 11 वें समुल्लास, जिसमें वर्तमान सनातनी या हिन्दू धर्म के प्रत्येक सम्प्रदाय और यहां तक कि सुधारवादी समझे जाने वाले कबीर और नानक पंथी धर्मों की भी जो समालोचना की गई है उनका कोई औचित्य बाकी नहीं रहता। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश और उसके अन्त में जिन मन्तव्यों का प्रतिपादन किया है उन पर आधारित वैदिक धर्म सनातन और प्राचीन होकर भी आधुनिक पौराणिक या सनातनी हिन्दू धर्म से सर्वथा भिन्न है। ऐसा होने पर ही दयानन्द का यह स्वप्न पूरा हो सकता है कि किसी दिन समस्त मानव समाज और विशेष कर हिन्दू इस सार्वभौम वैदिक धर्म को स्वीकार कर लेंगे। हिन्दू धर्म से भिन्न आर्य समाज के वैदिक धर्म की एक महत्त्वपूर्ण भिन्नता यह भी है कि वह एक मिशनरी अर्थात् प्रचारक धर्म है जो ईसाई, मुसलमान आदि धर्मों के समान अन्य धर्मों के अनुयायियों को वैदिक धर्म में दीक्षित करने का

Scanned with CamScanner

प्रयत्न करना अपना धार्मिक कर्त्तव्य मानता है। इसीलिये स्वामी जी ने स्वमन्तव्य के प्रारम्भ में सत्य को मानने के साथ उसे मनवाने और असत्य को स्वयं छोड़ने के साथ ही उसे अन्यों से भी छुड़वाने की प्रेरणा दी है। अन्य मतों की समालोचना करने का भी उनका यही उद्देश्य हो सकता है। अन्य धर्मावलंबी भी इसी उद्देश्य से हिन्दू तथा वैदिक धर्म की कठोर शब्दों में समालोचना करते रहे हैं। ऋषि दयानन्द की यह महानता और उदारता है कि वैदिक धर्म को सार्वभौम और सत्य मानने के बाद भी उन्होंने उसके लिये अपने एकाधिकार का दावा नहीं किया और न उनका यह प्रयत्न था कि अन्य मतावलंवियों के समान वे अपने समर्थकों तथा अनुयायियों की जोर जबरदस्ती या लोभ लालच से येन केन प्रकारेण संख्या बढ़ाकर अपने मत का प्रचार और प्रसार करें। आर्य समाज का आधार जिस वैदिक धर्म पर है और जिसे वह मानता है तथा जिस का प्रचार करना चाहता है वह ऋषि दयानन्द की ही देन है, यह स्वीकार करने में भी हमें कोई संकोच नहीं होना चाहिये क्योंकि यह वास्तविक सत्य है। वेद तो सनातनी हिन्दू भी मानने का दावा करते हैं किन्तु वे ऋषि दयानन्द द्वारा किये गये वेद भाष्य को स्वीकार नहीं करते जो हमारे वैदिक धर्म का मुख्य आधार है, बल्कि पौराणिक हिन्दू मूर्ति पूजा, जात पात छुआछूत, तीर्थ यात्रा और बाल विवाह आदि सब वेद विहित मानते हैं।

## वैदिक सिद्धान्त

सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम 10 समुल्लासों में स्वमन्तव्य प्रकाश में निर्देशित सब वैदिक सिद्धान्तों का सरल भाषा में इस ग्रन्थमाला की अन्य पुस्तकों में विवेचन किया गया है। यहां हम उनमें से कुछ आधारभूत मन्तव्यों का ही उल्लेख करेंगे और वह भी इस लिये कि स्वामी जी ने स्वमन्तव्यामन्तव्य में स्वयं अपने शब्दों

Scanned with CamScanner

में उनका संक्षिप्तिकरण किया है। इन में 33 ऐसे हैं जिन को स्वामी जी ने अपनी आर्योद्देश्यरत्नमाला में भी परिभाषित किया है।

इनमें से कुछ महत्त्वपूर्ण मन्तव्य या सिद्धान्त इस प्रकार हैं :–

## १–ईश्वर

सब धर्मों का मुख्य आधार ईश्वर विश्वास ही है किन्तु ईश्वर की अलग–अलग तथा परस्पर विरोधी कल्पनाएं धर्मों के अन्तर और विरोध का कारण है। ईश्वर के नाम पर उनमें अनेक बुद्धि विहीन, समाज विरोधी और यहाँ तक कि अनैतिक अन्धविश्वास प्रचलित हैं। इसलिये स्वामी जी ने सर्वप्रथम ईश्वर की स्पष्ट और बुद्धि संगत व्याख्या की है, जिसके अनुसार ईश्वर कोई शरीरधारी व्यक्ति न होकर एक निराकार चैतन्य शक्ति है। यह आधार भूत सिद्धान्त स्वीकार कर लेने के बाद ईश्वर के अस्तित्व, आवश्यकता तथा कार्यों के बारे में सब प्रकार की शंकाओं का आसानी से समाधान किया जा सकता है। वर्तमान या भविष्य में होने वाली कोई वैज्ञानिक खोज भी स्वामी दयानन्द द्वारा परिभाषित इस प्रकार के ईश्वर के अस्तित्व से इन्कार नहीं कर सकती। ईश्वर विश्वास मनुष्य की आत्मा में निहित है। इसीलिये उसे परमात्मा कहा गया है किन्तु वह भौतिक वैज्ञानिकों के प्राकृतिक अन्वेषण का न विषय है और न ही हो सकता है। स्वामी दयानन्द ने ईश्वर को सच्चिदानन्द, सर्वज्ञ, निराकार, सर्व व्यापक, अनादि, अनन्त और निराकारी आदि कहा है। आर्य समाज के दूसरे नियम में ईश्वर के इन समस्त गुणों का उल्लेख हैं।

## सर्वशक्तिमान् का अर्थ

आर्य समाज के दूसरे नियम में ईश्वर के यह जो 19 लक्षण बताए गये हैं, वे ईश्वर की पूर्ण परिभाषा करते हैं, इतना ही नहीं

Scanned with CamScanner

यदि ईश्वर है तो उसके यही लक्षण या परिभाषा तर्क संगत हो सकती है अन्यथा ईश्वर का अस्तित्व और यहां तक कि उसकी आवश्यकता दोनों के सम्बन्ध में वर्तमान वैज्ञानिक युग में आस्था बनाये रखना सम्भव नहीं है और न ही ईश्वर के नाम पर होने वाले अन्धविश्वास समाप्त किये जा सकते हैं। उदाहरण के लिये यदि ईश्वर न्यायकारी है तो वह चाहे किसी को सुखी, किसी को दुःखी, किसी को धनवान और किसी को गरीब किस आधार पर बना सकता है ? स्वामी जी का कहना है कि सर्वशक्तिमान् ईश्वर तभी न्यायकारी हो सकता है जब वह चाहे जो करने में स्वतन्त्र न होकर जो करना चाहिये या जो ईश्वर के स्वयं के नियमानुसार है, वही करता हो।

## निराकार

इसी प्रकार यदि ईश्वर निराकार न होकर शरीरधारी है तो वह सब जगह व्यापक नहीं हो सकता। उर्दू के एक कवि ने इसीलिये ठीक कहा है कि–"जाहिद शराब पीने दे मस्जिद में बैठकर या वह जगह बता जहाँ खुदा न हो।" ईश्वर का अजन्मा होना भी अनिवार्य है क्योंकि यदि वह जन्म लेता हो तो उसकी मृत्यु भी अनिवार्य है। शरीरधारी होने पर वह रोग तथा अन्य शारीरिक कष्टों और आवश्यकताओं से भी बच नहीं सकता। सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापक ईश्वर के लिये दुष्टों का नाश करने के लिये भी शरीर धारण करके अवतार लेने की क्या आवश्यकता है ?

## त्रैतवाद

त्रैतवाद के दूसरे दो मुख्य सिद्धान्त जीवात्मा और प्राकृति सम्बन्धी हैं। इस सिद्धान्त के अनुसार यह दोनों भी ईश्वर के समान अनादि हैं और उनका अस्तित्व भी पृथक् है। किन्तु जीव, ईश्वर के समान चेतन है किन्तु प्रकृति जड़ है। इन तीनों के पृथक तथा

Scanned with CamScanner

अनादि और अनन्त अस्तित्व के आधार पर ही हम उन अनेक शंकाओं का समाधान कर सकते हैं जो केवल ईश्वर अथवा ईश्वर और प्रकृति को मानने वाले अद्वैत और द्वैत मतों के कारण उत्पन्न होती हैं। उदाहरण के लिये यदि जीव को ईश्वर ने उत्पन्न किया ऐसा माना जाये, तो पहला प्रश्न यह है कि उसने ऐसा क्यों किया और उसके कारण मनुष्य को सुख–दुःख, जीवन और मृत्यु के कारण जो कष्ट होते हैं उनके लिये ईश्वर ही उत्तरदायी क्यों न समझा जाये ? पाप पुण्य की समस्या भी अन्य किसी सिद्धान्त द्वारा हल नहीं हो सकती और न स्वर्ग–नरक तथा मृत्यु के बाद पुनर्जन्म का ही सन्तोषप्रद उत्तर मिल सकता है। त्रैतवाद के द्वारा ही ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करने के बाद भी कर्म और पुरुषार्थ करने में मनुष्य की स्वतन्त्रता और परिणामस्वरूप उत्तरदायित्व सुरक्षित रक्खा जा सकता है। अन्य मतों में ईश्वर की जो कल्पना की गई है उसके अनुसार मनुष्य ईश्वर के हाथ का एक असहाय खिलौना मात्र रह जाता है। निर्दोष मनुष्य की इस असहाय स्थिति का लाभ उठाकर ही गुरु, पैगम्बर और अवतारों की कल्पना की गई है और यह कहा गया है कि ईश्वर के स्थान में उन पर विश्वास करने या उनकी भक्ति करने से ही ईश्वर द्वारा मनुष्य रूपी इस निर्दोष कैदी की जन्म–मरण, स्वर्ग–नरक से मुक्ति हो सकती है। इस विश्वास को और अधिक पक्का करने के लिये उसके साथ भय और डर का भी समावेश क़िया जाता है और यह कहा जाता है कि यदि हमने ईश्वर के इन ठेकेदारों की शरण नहीं ली तो हमें ईश्वर भयंकर दण्ड देगा और हम सदा के लिये नरक की अग्नि में जलते रहेंगे। यह सब बाते ऐसी हैं जिनका न कोई सिर है और न पैर है, न जिन पर आज के इस बुद्धिवादी युग में कोई समझदार आदमी विश्वास ही कर सकता है। क्योंकि हम देखते हैं कि स्वयं ये गुरु, अवतार

Scanned with CamScanner

और पैगम्बर अन्य मनुष्यों के समान अपने को सुख–दुःख, जीवन–मरण, और रोगादि के चक्कर से मुक्त नहीं कर पाते। ऐसी स्थिति में उन पर विश्वास करने वालों का वे कैसे उद्धार कर सकते हैं ?

## ईश्वर, जीव और प्रकृति

वेद के ईश्वर, जीव और प्रकृति तीनों के अनादि और स्वतन्त्र अस्तित्त्व का यह सिद्धान्त ही ऐसा है जो उपरोक्त सब प्रकार की समस्याओं और बौद्धिक उलझनों का समाधान करता है। इस सिद्धान्त के अनुसार ईश्वर न जीवों का जन्मदाता है और न ही प्रकृति का निर्माता। उसकी स्थिति उस निष्पक्ष न्यायाधीश के समान है जो ईश्वरीय नियमों के अनुसार कर्मों का फल देता है। जीव और प्रकृति केवल सत् अर्थात् अनादि तथा अनन्त हैं। जीव सत् और चित् दोनों है किन्तु ईश्वर में इन दोनों से एक और विशेष गुण है अर्थात् आनन्द। इसलिये ईश्वर को सच्चिदानन्द कहा गया है। इन तीनों के पारस्परिक सम्बन्ध को समझाने के लिये स्वामी दयानन्द ने एक सुन्दर उदाहरण दिया है–ईश्वर कुम्हार के समान है जो मिट्टी से घड़ा तो बनाता है, किन्तु मिट्टी नहीं बनाता। मिट्टी तो पहले ही मौजूद है। ईश्वर सृष्टि का कर्त्ता भी इसी अर्थ में है। दूसरा कोई दार्शनिक या वैज्ञानिक सिद्धान्त ऐसा नहीं है जो ईश्वर, जीव और प्रकृति के सम्बन्ध में कोई बुद्धिसंगत उत्तर दे सके। उदाहरण के लिये भारतीय दर्शन ही के दो अन्य सिद्धान्त हैं अर्थात् अद्वैतवाद जिसमें केवल ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार किया गया है और जीव तथा प्रकृति उसी के रूपान्तर कहे गये हैं तथा द्वैतवाद जिसमें प्रकृति के पृथक् अस्तित्व को स्वीकार किया गया है, यह दोनों सिद्धान्त भी उन प्रश्नों का उत्तर देने में असमर्थ है जिसका उत्तर त्रैतवाद द्वारा दिया जा सकता है।

Scanned with CamScanner

## ईश्वरीय ज्ञान-वेद

ईश्वर तथा जीव और प्रकृति के अस्तित्त्व और इन तीनों के परस्पर सम्बन्ध के बारे में प्रायः सब धर्मों के अपने–अपने विचार हैं जिनका विवेचन इन धर्मों द्वारा मान्य ईश्वरीय ज्ञान की पुस्तकों में हैं। यदि ईश्वर है तो मनुष्य को उसके ज्ञान या मार्ग दर्शन की भी आवश्यकता है। वैदिक धर्म का आधार वेद है और वेद के ईश्वरीय ज्ञान होने के समर्थन में स्वामी जी की जो तर्क और मान्यताएँ हैं, वे अन्य धर्म पुस्तकों के समर्थन में दी जाने वाली दलीलों से कहीं अधिक वैज्ञानिक और बुद्धि संगत हैं। श्री गंगाप्रसादजी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "धर्म का आदि स्रोत" में संसार के प्रमुख धर्मों की आयु अर्थात् उत्पत्तिकाल का तथ्यों के आधार पर विवरण दिया है जिसके अनुसार यहूदी धर्म और उसकी धर्म पुस्तक ढ़ाई से तीन हजार वर्ष से अधिक प्राचीन नहीं है। ईसाई धर्म की आयु लगभग दो हजार तथा इस्लाम डेढ़ हजार वर्ष से भी कम आयु के धर्म हैं। इसलिये पहला प्रश्न तो यह है कि क्या इससे पूर्व मनुष्य के लिये ईश्वर ने कोई ज्ञान देने की आवश्यकता नहीं समझी और नहीं तो क्यों नहीं समझी ? वस्तुतः वर्तमान वैज्ञानिकों के अनुसार भी मनुष्य की सृष्टि को करोड़ों नहीं तो लाखों वर्ष तो हो गये हैं। वेद के अनुसार तो वर्तमान सृष्टि एक अरब वर्ष से भी अधिक पुरानी है। ऐसी स्थिति में सृष्टि के प्रारम्भ में निर्मित वेद ही ईश्वरीय ज्ञान हो सकते हैं। पश्चिम के आधुनिक विद्वानों के अनुसार भी वेद अन्य सब धर्म पुस्तकों से पुरानी पुस्तक है। इसी प्रकार जहाँ अन्य धर्म पुस्तकों में किसी देश, जाति या धर्म विशेष को सम्बोधन किया गया है वहाँ वेद केवल मनुष्य मात्र को सम्बोधित करते हैं, अर्थात् उसमें किसी देश, जाति, नस्ल या मत का जिक्र नहीं है। स्वयं वेद शब्द का अर्थ ही ज्ञान है। वह कुरान और बाइबिल के समान किसी

Scanned with CamScanner

पुस्तक का सूचक शब्द नहीं है। वेदों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में भी ऋषि दयानन्द का तर्क बुद्धि संगत है। अन्य धर्म पुस्तकों के सम्बन्ध में यह दावा किया जाता है कि या तो वे आसमान से उतर कर आई या ईश्वर ने आकाशवाणी करके उन्हें लिखाया है। पहले तो जिन भाषाओं में ये धर्म ग्रन्थ है वे केवल किसी देश और जाति विशेष की भाषा है। किन्तु ईश्वरीय ज्ञान केवल एक देशीय या जाति की भाषा में नहीं हो सकता। चार हजार वर्ष पूर्व भी अन्य देशों में अनेक भाषाएँ प्रचलित थीं। अतः किसी अन्य भाषा में ईश्वरीय ज्ञान प्रकट न होना पक्षपात का प्रमाण है। यह भी सर्वसम्मत है कि मनुष्य जाति की सबसे प्राचीन और एकमात्र भाषा संस्कृत है। अन्य भाषाएँ उसके बाद या उससे बनी हैं। वेद का ज्ञान संस्कृत में होना इसलिये भी तर्क सम्मत है। स्वामीजी के अनुसार वेद का ज्ञान लिखित प्राप्त नहीं हुआ क्योंकि ऐसा करने के लिये ईश्वर को शरीरधारी होना आवश्यक था। वस्तुतः निराकार ईश्वर ने इस ज्ञान का प्रकाश निराकार आत्मा में किया है। इस प्रकार ईश्वरीय ज्ञान का आत्मा द्वारा प्रकाश होना सब दृष्टियों से बुद्धिसंगत है। उसमें आधुनिकतम ज्ञान के विकास के लिये भी उतना ही स्थान है जितना प्राचीन ज्ञान के लिये। दूसरी और अन्य धर्म ग्रन्थों में न केवल उनकी उत्पत्ति के समय और स्थान में जो–जो बातें प्रचलित या विदित थीं केवल उन्हीं का उल्लेख है। अल्पज्ञ मनुष्य के लिये सर्वज्ञ ईश्वर ही समस्त ज्ञान का प्रेरक है। स्वामी जी ने इसलिये ईश्वर को सब सत्य विद्याओं का आदि मूल और वेद के ज्ञान को सब सत्य विद्याओं का स्रोत कहा है। स्पष्ट है कि ऐसा ज्ञान मनुष्यमात्र को प्रेरणा और सही मार्ग दर्शन देने वाला होना चाहिये।

## धर्म क्या है ?

ईश्वर और ईश्वरीय ज्ञान की इन तर्कपूर्ण परिभाषाओं के समान स्वामी जी ने अपने स्वमन्तव्यामन्तव्य में धर्म की जो परिभाषा

Scanned with CamScanner

की है, वह भी बड़ी ही बुद्धिसंगत और सर्व ग्राह्य है। स्वामीजी के अनुसार–पक्षपात रहित न्यायाचरण सत्य भाषणादि वेद विहित आज्ञा का नाम धर्म है। इस कसौटी पर अन्य धर्म सार्वभौम यानी सब मनुष्यों के लिये मान्य धर्म नहीं हो सकते जैसा कि वैदिक धर्म हो सकता है। उन्हें हम मत, मजहब या रिलीजन भले ही कह दें जो एक दूसरे के विरोधी भी हैं।

## देवता और राक्षस

इसी प्रकार देव या देवता की परिभाषा करते हुए स्वामी जी ने कहा कि जो विद्वान् है वह देव है और राक्षस कोई पृथक् या विकृत शरीर और आकृति के जीव नहीं हैं बल्कि जो पापी मनुष्य है वही राक्षस है।

## तीर्थ

तीर्थ कोई नदी, जल या स्थान नहीं है। दुःख सागर से पार करने वाले शुभ कर्मों का नाम ही तीर्थ है।

## आर्य

पश्चिम के विद्वान् और उनके अनुयायी भारतीय भी यह कहते हैं कि आर्य एक बाहर से आई हुई जाति के लोगों का नाम है। स्वामी जी के अनुसार श्रेष्ठ पुरुष आर्य और दुष्ट व्यक्ति दस्यु है, चाहे वे काले हों या गोरे, उत्तर के रहने वाले हों या दक्षिण के या किसी और देश के।

## स्वर्ग और नरक

स्वर्ग और नरक भी आकाश या पाताल में किसी स्थान विशेष का नाम नहीं है। स्वामीजी के अनुसार सुख का अर्थ स्वर्ग और दुःख का अर्थ नरक है और वे इसी संसार में मनुष्य की मानसिक अवस्थाएँ मात्र हैं।

Scanned with CamScanner

ऋषि दयानन्द के पूर्व किसी ने धर्म–तीर्थ, स्वर्ग–नरक, देवता–राक्षस आर्य और अनार्य की ऐसी परिभाषाएँ नहीं की। यही कारण है कि इन सबके साथ अनेक अन्धविश्वास और कुरीतियाँ सम्मिलित हो गई जिन्हें दूर करने के लिये स्वामी जी ने इन मान्यताओं का एक सर्वथा नवीन स्वरूप प्रस्तुत किया। इनके अतिरिक्त सृष्टि, बन्ध, मोक्ष, अर्थ, वर्णाश्रम, राजा, प्रजा; शिक्षा, पुराण, यक्ष, गुरु, पुरोहित, विवाह, स्तुति, प्रार्थना, उपासना और निर्गुण तथा सगुण आदि अन्य मान्यताओं की भी स्वामी जी ने ऐसी ही नवीन परिभाषाएँ प्रस्तुत की हैं।

## खण्डन मण्डन का उद्देश्य

सत्यार्थ प्रकाश में स्वामी जी ने जिन बातों का मण्डन और जिनका खण्डन किया है, उन सब के पीछे उनका एक महान् उद्देश्य था। सत्यार्थ प्रकाश की प्रारम्भिक भूमिका में वह कहते हैं कि "सब सत्य का प्रचार करना, सबको ऐक्य मत में करा द्वेष छुड़ा परस्पर दृढ़ प्रीतियुक्त कराके सब से सबको आवश्यक लाभ पहुंचाने के लिये मेरा यह प्रयत्न और अभिप्राय है।' इससे पूर्व वे कहते हैं कि "मत मतान्तरों के झगड़ों के कारण ही मनुष्य मनुष्य के शत्रु बनते हैं। मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य असत्य अर्थ का प्रकाश करना है। विद्वानों का यही मुख्य काम है कि मनुष्य के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित करने के पश्चात् वे स्वयं अपना हिताहित समझ कर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहे।"

## खण्डन क्यों समीक्षा नहीं अहसान

आजकल सर्वधर्म सम्भाव की धर्म निरपेक्षता की सर्वथा अव्यवहारिक तथा अप्रासंगिक व्याख्या के परिणामस्वरूप आर्य समाज के कुछ समालोचक यह कहते हैं कि महर्षि दयानन्द ने अन्य मतों

Scanned with CamScanner

का खण्डन करके धर्म निरपेक्षता अर्थात् सैक्यूलेरिज्म का विरोध किया है, हमारे ये समालोचक यह नहीं समझते कि धर्म के नाम पर सतीप्रथा स्त्रियों के प्रति भेदभाव, बाल विवाह, छुआछूत, नरबलि आदि की जो सामाजिक कुरीतियाँ प्रचलित है, उनका आधार धार्मिक विश्वास ही है, यदि उनका भारतीय संविधान में किया गया निषेध धर्म निरपेक्षता के सिद्धान्त के विपरीत नहीं है तो ऋषि दयानन्द द्वारा इनका खण्डन करने के लिये उनकी प्रशंसा करने के स्थान में उनकी समीक्षा क्यों की जाये ? जहाँ तक ईसाई और मुसलमानों के धार्मिक विश्वासों के खण्डन का प्रश्न है, उनके पीछे भी स्वामी जी की राष्ट्रीय एकता और मत मतान्तरों में झगड़ों का निराकरण करना ही उद्देश्य था, जहां तक हिन्दुओं का प्रश्न है उन्हें इसके लिये महर्षि दयानन्द का अहसान मानना चाहिये, क्यों कि इन मतों के खण्डनों का महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक ध र्म से कोई लेना देना नहीं है, क्यों कि जिस वैदिक धर्म को महर्षि दयानन्द ने पुनः प्रतिपादित किया है वह सर्वथा तर्क संगत है। ऐसी स्थिति में उसकी रक्षा के लिये उन्हें विदेशी धर्मों के खण्डनों की कोई आवश्यकता नहीं थी यह अपरिहार्य कार्य उन्होंने केवल हिन्दू धर्म के नाम पर प्रचलित अंधविश्वासों और सामाजिक कुरीतियों के निराकरण के लिये ही किया है इसीलिये उन्होंने जहां सबसे पहले हिन्दू धर्म में प्रचलित उन मत मतान्तरों का खण्डन किया है जिनके आधार पर ये सब कुरीतियाँ प्रचलित थीं और जिन्हें लेकर ये विदेशी धर्म हिन्दू धर्म पर आक्रमण करते थे और उनका और धर्मान्तरण तक करते थे इसलिये हिन्दू या पौराणिक धर्म के अनुयायियों को ऋषि दयानन्द का उपकार मानना चाहिये क्यों कि यह कार्य उन्होंने केवल तथाकथित हिन्दू धर्म के अनुयायियों की रक्षा के लिये ही किया था।

Scanned with CamScanner

## विचार स्वतन्त्रता

यद्यपि स्वामी जी द्वारा प्रतिपादित मन्तव्य सर्वथा बुद्धिसंगत हैं फिर भी उन्होंने उन्हें स्वीकार करने या न करने की सबको स्वतन्त्रता देकर अपनी निष्पक्षता और विचार स्वतन्त्रता का परिचय दिया है और साथ ही यह स्पष्ट किया है कि जहां कहीं किसी मत या विषय की समालोचना की गई है, उसमें 'न किसी का मन दुखाना वा किसी की हानि का तात्पर्य है किन्तु समस्त मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार ही एकमात्र लक्ष्य है।" उन्होंने अपने ग्रन्थ में मनुष्य मात्र को लक्ष्य करके ही सब कुछ लिखा है क्योंकि वे किसी जाति, मजहब, सम्प्रदाय और यहां तक कि देश तक की सीमाओं से ऊपर थे। इसलिये उनके सिद्धान्त सार्वभौम महत्त्व के हैं। अपने मतभेद के उपरान्त भी उन्होंने उदारतापूर्वक यह स्वीकार किया है कि – प्रत्येक मत में बहुत से विद्वान् हैं – और यह आशा व्यक्त की है कि यदि "वे सब अपने मत मतांतरों के पक्षपात और दुराग्रह से ऊपर उठकर जो जो बातें सब के अनुकूल हैं, उनका ग्रहण करें तो सब मनुष्य दुःख सागर में डूबने से बच सकते हैं क्योंकि विद्वानों के विरोध से अविद्वानों में विरोध बढ़कर अनेकविध दुःख की वृद्धि और सुख की हानि होती है।" स्वामी जी ने इसी उद्देश्य से देहली में सर्वधर्म सम्मेलन तक आयोजित किया।

## विरोध क्यों ?

दुर्भाग्य से अनेक व्यक्ति शिक्षित और विद्वान् होने पर भी स्वामी जी के समान सत्य स्वीकार करने और असत्य को छोड़ने का साहस नहीं कर पाते और इसीलिये स्वामी जी को समझाना पड़ा कि "इनमें से जो कोई सार्वजनिक हित लक्ष्य को रखकर ऐसा साहस करते हैं, उनका स्वार्थी लोग विरोध करके अनेक प्रकार से विघ्न उत्पन्न करते हैं।" स्वामी जी के साथ भी ऐसा ही व्यवहार किया गया। उन पर पत्थर और जूते फैंके गये। तलवार और लाठियों से आक्रमण किये गये और अन्त में विष देकर उनकी हत्या

Scanned with CamScanner

तक की गई। इतना होने पर भी क्षमा, दया और उदारता के इस अवतार ने अपने मन में किसी के प्रति द्वेष या दुर्भावना पनपने नहीं दी।

## दयानन्द की महान् उदारता

उनको विष देने वाला व्यक्ति पुलिस द्वारा पकड़ कर जब उनके सामने प्रस्तुत किया गया तो उन्होंने जो वाक्य कहे वे मानव इतिहास में चिरस्मरणीय रहेंगे। अपने हत्यारे को छोड़ देने का आग्रह करते हुए उन्होंने कहा कि "मैं संसार में किसी को बन्धन में डालने के लिये नहीं आया हूँ, अपितु मनुष्य मात्र को मुक्त कराने के लिये आया हूँ।" अभूतपूर्व विद्वान्, चरित्रवान, त्यागी और तपस्वी महापुरुष होने पर भी वे अपने आपको भूलचूक करने वाला मनुष्य ही समझते थे। अन्य अधकचरे और पाप के बाद पश्चाताप करके बने अवतारों, गुरुओं और महात्माओं के समान उन्होंने कभी अपने को भगवान् या दैवी व्यक्ति नहीं कहा। सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में इसलिये वे कहते हैं कि उसमें यदि "भूलचूक रह गई हो तो उसको जानने पर जैसा वह सत्य होगा वैसा ही कर दिया जायेगा।"

## सत्य शोधक

यह स्पष्ट है कि स्वामी जी ने केवल सत्यासत्य के विवेचन के लिये अन्य मत मतान्तरों की आलोचना की है। यह कार्य अप्रिय होने पर भी उनके लिये वैसे ही अनिवार्य था जैसा एक आधुनिक सत्य शोधक वैज्ञानिक के लिये ऐसा करना अपने शोध कार्य में आवश्यक होता है। यह विचित्र बात है कि आज कल जो व्यक्ति चाहे वे कितने ही विद्वान् और प्रसिद्ध हो, भौतिक विज्ञान में ही नहीं अपितु राजनैतिक, साहित्यिक तथा आर्थिक क्षेत्र में भी अपने विपक्षियों की मान्यताओं की प्रतिदिन कड़ी से कड़ी और अशिष्ट भाषा तक में आलोचना करना अपनी विचार स्वतन्त्रता का अधिकार समझते हैं किन्तु धार्मिक क्षेत्र में की जाने वाली समीक्षा का उदारता और सहिष्णुता के नाम पर वे विरोध करते हैं। इतना ही नहीं धर्म

Scanned with CamScanner

ई वैदिक पुस्तकालय मुम्बई


के नाम पर की जाने वाली अनेक कुरीतियाँ, अनैतिक और असामाजिक रीति रिवाज और दकियानूसी अन्य विश्वासों तक का न केवल धर्म निरपेक्षता के नाम पर समर्थन ही किया जाता है बल्कि उनको केवल वोट आदि प्राप्त करने के राजनैतिक स्वार्थसिद्धि के लिये प्रोत्साहन तक दिया जाता है। ऐसे लोग अपने राजनैतिक विरोधियों के साथ अत्यन्त असहिष्णुता, कभी–कभी हत्या जैसी निर्दयता करने तक से संकोच नहीं करते। इसी प्रकार धार्मिक क्षेत्र में भी अन्य धर्मों के अनुयाइयों को काफिर, म्लेच्छ कहकर उनके हत्यारों को शहीद मानकर प्रोत्साहन देने वाले व्यक्ति तक स्वामी जी जैसे निष्पक्ष और निष्कलंक महापुरुष द्वारा तार्किक और बौद्धिक समालोचना को सहन नहीं करना चाहते।

## स्वामी जी की विशेष स्थिति

धार्मिक क्षेत्र में सम्भवतः ऋषि दयानन्द ही एक ऐसे आधुनिक महापुरुष थे जिन्हें अन्य बड़े से बड़े धार्मिक संस्थापक की समीक्षा करने का एक संन्यासी की हैसियत से नैतिक अधिकार था। स्वामी जी अपनी विद्वता, निष्कलंक चरित्र और महान् त्याग तथा अपूर्व प्रतिभा आदि विशिष्ट गुणों में भी श्रेष्ठ थे। प्रायः सब धर्म गुरु प्रारम्भिक जीवन में मानव कमजोरियों के शिकार हुए बिना, नहीं रह सके और साधारण व्यक्तियों की, विवाह, गृहस्थ, सन्तान, सम्पत्ति आदि की आवश्यकताओं के प्रलोभनों से भी नहीं बच सके। इसमें सन्देह नहीं कि इन कमजोरियों के बावजूद भी उन्होंने अपने जीवन में सुधार और प्रगति करके सर्व साधारण के लिये अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया था। किन्तु स्वामी जी जैसे बाल ब्रह्मचारी का जीवन और चरित्र प्रारम्भ से ही अनुकरणीय रहा है। उनकी इस विशेषता के कारण अन्य मतों की समीक्षा करने का उन्हें जो अधिकार है वह इन सबको नहीं हो सकता।



सम्पर्क - 9029421718

Scanned with CamScanner

# हमारा प्रिय सत्यार्थप्रकाश

( 1 )

हमारे गुरु का आशीर्वाद, हमारे ऋषि का अमर विधान ।
मिटाकर जग का विषम विषाद, करेगा वही विश्व–कल्याण ।।
इष्ट फल देगा नित्य नवीन, कल्पपादप का पुष्पाभास ।
करे वह असत्–विचार विहीन, हमारा प्रिय "सत्यार्थ प्रकाश" ।।

( 2 )

निगम का आगम का अवतार, भव्य भावों का भुवि भण्डार ।
प्रेम के पथ का पारावार, ज्ञान का गुण का रत्नागार ।।
चमकते जिसमें रत्न अनेक, नित्य प्रति पाते विविध विकास ।
सत्य का सागर बस वह एक, हमारा प्रिय "सत्यार्थ प्रकाश"।।

( 3 )

विविध पंथों का तामस तोम, भरा था भू पर भ्रम भरपूर ।
अखिल आच्छादित था वर व्योम, न कर सकता था कोई दूर ।।
गगन में हुआ ज्ञान विस्फोट, किया अज्ञान अंधेरा नाश ।
असत् पर मारी भारी चोट, हमारा प्रिय "सत्यार्थ प्रकाश" ।।

( 4 )

किया द्रुत खण्ड खण्ड पाखण्ड, चलाकर तेज तर्क का तीर ।
आक्रमण हुआ प्रभूत प्रखण्ड, दम्भगढ गिरा सहित प्राचीर ।।
विलखते हैं मतवादी आज, करें कैसे किसकी अब आश ।
असत् पर गिरा गर्ज कर गाज, हमारा प्रिय "सत्यार्थ प्रकाश ।।

( 5 )

"सूर्य" में रहे रश्मियाँ सात, यहाँ चौदह पूरे उल्लास ।
"सूर्य" करता न प्रकाशित रात, सतत यह देता ज्ञान प्रकाश ।।
"सूर्य" पर छाते घन बरसात, ग्रहण में होता भारी ह्रास ।
किन्तु "सत्यार्थ" सदा अभिजात, हमारा प्रिय "सत्यार्थ प्रकाश" ।।


**-: रचयिता :-**

**(डॉ० सूर्यदेव शर्मा शास्त्री, साहित्यालंकार, एम. ए. डी. लिट्.)**

**अजमेर**


Scanned with CamScanner

# सुन्दर, साहित्य और सस्ते साहित्य प्रचार की योज़ना में सहयोग दीजिए

आर्य समाज अजमेर के निष्ठावान् विद्वान् डॉ. सूर्यदेव जी की 22 हजार रूपयों की उदार सहायता के कारण आर्यसमाज अजमेर ने 50 हजार रुपये व्यय करके सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थमाला के 15 भागों की 75 हजार प्रतियां (प्रथम संस्करण), लागत से भी कम मूल्य पर वितरित की हैं।

क. इसी ग्रन्थमाला के समान ऋषि दयानन्द तथा वैदिक सिद्धान्तों के सम्बन्ध में हिन्दी अंग्रेजी ट्रेक्सट।

ख. स्वामी जी के पत्र व्यवहार पर आधारित उनके कार्य और विचारों का संकलन।

ग. आर्य समाज अजमेर के गत 100 वर्षों का इतिहास जिसमें ऋषि दयानन्द के अन्तिम वर्षों से सम्बन्धित समाज के अभिलेखों से प्राप्त विवरण।

उपर्युक्त एवं आवरण पृष्ठ संख्या 2 पर लिखित साहित्य के प्रकाशन में आर्थिक सहायता देने वाले सज्जनों के संबंध में प्रत्येक पुस्तक में निम्न प्रकार से उनके प्रति आभार व्यक्त किया जावेगा।

* पाँच सौ रुपये से एक हजार रुपये तक दान देने वालों के नाम का उल्लेख।
* एक हजार रुपये से तीन हजार रुपये तक देने वाले दान दाताओं का संक्षिप्त परिचय।
* तीन हजार रु. से ऊपर देने वाले दान दाताओं का चित्र और परिचय।

## दयानन्द शोध पीठ के प्रकाशन

दयानन्द स्नातकोत्तर कॉलेज में दयानन्द शोध पीठ की स्थापना हो चुकी है। प्रति वर्ष उसकी ओर से नियमित रूप से महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों एवं मन्तव्यों पर महत्त्वपूर्ण शोध तथा उपयोगी साहित्य का प्रकाशन किया जा रहा है।

इसका उद्धृत साहित्य निम्न प्रकार है :—

| | | मूल्य |
|---|---|---|
| 1 | महर्षि दयानन्द पत्रों के दर्पण में | 50.00 |
| 2 | नासीद सृष्टि विज्ञान एवं दशवाद रहस्य | |
| 3 | त्रयी विद्या | |
| 4 | सार्वभौम वैदिक धर्म | |
| 5 | महर्षि दयानन्द की राष्ट्रीय धार्मिक एवं सामाजिक मान्यताओं की प्रासंगिकता | |

प्राप्ति स्थान – **आर्य समाज, अजमेर**

Scanned with CamScanner

# चौदह रतनों की पुस्तक

## (सत्यार्थप्रकाश के मुख्य विषय)

तर्ज - हॉ जी चालो टंकारा .....

हॉ जी दयानन्द आए जी, हाँ हाँ जी दयानन्द आए जी ।
चौदह रतन की पुस्तक लाए जी, दयानन्द आए जी ।। टेक ।।
झूंठी बात को सच्ची जानी, सच्ची को झूंठी मानी ।
स्वर्ग लोक का ठेका लिया, पण्डे करते थे मन मानी ।
ऐसे समय में सत्या-सत्य का, बोध कराए जी ।।१।। दयानन्द ....
दस है पूरव आधे सुनलो, चार है उत्तर आधे जी ।
पाठ दसों में मंडन ज्यादा, चार में खण्डन ज्यादा जी ।
चौदह रतन का ग्रन्थ अनोखा, दयानन्द लाए जी ।।२।। दयानन्द ....
ईश्वर का निज नाम ओम् है, पहले में बतलाए हैं ।
गौणिक नाम प्रभु के इसमें, कितने ही बतलाए हैं ।
शताधिक नामों की व्याख्या, कर समझाए जी ।।३।। दयानन्द ....
भूत प्रेत और क्रूर ग्रहों का, पूरा है खण्डन किया ।
बच्चों को पाखण्डियों से, दूर रखें आदेश दिया ।
दूजे पाठ में अंधविश्वास को, दूर हटाए जी ।।४।। दयानन्द ....
ब्रह्मचर्य को जिसने खोया, जीवन भर वह रोया है ।
कैसी हो बच्चों की शिक्षा, बीज उसी का बोया है ।
पाठ तीन में आर्ष-अनार्ष ग्रन्थों को बताए जी ।।५।। दयानन्द ....
पच्चीस वर्ष का जब युवा हो, सोलह वर्ष की हो युवती ।
दोनों के गुण कर्म स्वभाव को, देख बनाना दम्पति ।
चौथे पाठ में विवाह गृहस्थ के, धर्म बताए जी ।।६।। दयानन्द ....
दादा-दादी बन जाए तब, वानप्रस्थ में जाना है ।
जब भी पूरा हो वैरागी, सन्यासी बन जाना है ।
पाठ पाँच में इन दोनों के, धर्म बताए जी ।। ७।। दयानन्द ....
राज धर्म की पूरी बातें, छट्ठे में बतलाई है ।
सातवे में ईश्वर और, वेद की बात बताई है ।
ईश्वर, जीवों की सत्ता को, अलग बताए जी ।।८।। दयानन्द ....



Scanned with CamScanner

पाठ **आठ** में सृष्टि के, निर्माण का बोध कराया है ।
बनना, स्थिर रहना, बिगड़ना, इस का ज्ञान कराया है।
मानव की उत्पत्ति का, इतिहास बताए जी ।।९।। दयानन्द ....
विद्या-अविद्या किसको कहते, हमको ये बतलाया है ।
बन्धन क्या है? मुक्ति क्या है? पूरा खोल बताया है ।
कर्मों का फल पुनर्जन्म, **नव्वे** में बताए जी ।।१०।। दयानन्द ....
अनाचार-आचार की बातें, **दसवे** में समझाई है ।
आहार और व्यवहार की बातें, हमको खोल बताई है ।
खाद्य-अखाद्य वस्तुओं का, भेद बताए जी ।।११।। दयानन्द ....
भारत ज्ञान विज्ञान से ऊंचा क्यों? जग का उपहास हुआ ।
दुनिया का ये धर्म गुरू था, कैसे इस का ह्रास हुआ ।
**ग्यारहवे** समुल्लास में, ये पूरा बताए जी ।।१२।। दयानन्द ....
वाममार्गी पापी जन का, ऋषि ने भंडा फोड़ दिया ।
कबीर पन्थी, वेदान्ती को, तर्क से फिर झंझोड़ दिया ।
मूरत की पूजा के सोलह, दोष गिनाए जी ।।१३।। दयानन्द ....
**बारहवे** में चार्वाक की, मिथ्या बात बताई है ।
जैन और बौद्ध मतों की, नास्तिकता दरशाई है।
इन के ही ग्रन्थों से इनके, दोष दिखाए जी ।।१४।। दयानन्द ....
**तेरवे** में ईसा मसीह के, चमत्कार हैं बतलाए ।
अन्धे देखें गूंगे बोलें, मुर्दे जीवित करवाए ।
बाइबिल की सब पोल खोलकर, पथ दर्शाए जी है ।।१५।। दयानन्द
**चौदवे** में मुस्लिम मत के गप्पोड़े बतलाए हैं ।
खुदा ताला और मोहम्मद जी के, चमत्कार बतलाए हैं ।
करके समीक्षा आयत की,मुख बन्द कराए जी ।।१६।। दयानन्द ....
**दयानन्द का ग्रन्थ** अनोखा, है **सत्यार्थप्रकाश** जी ।
ध्यान लगा कर पढ़ना इस को, होगा ज्ञान प्रकाश जी ।
कितने ही लोगों के भ्रम का, भूत भगाए जी ।।१७।। दयानन्द ....
वैदिक धर्म की ज्योति को, दुनिया भर में पहुँचाओ जी ।
जन-जन तक ये पोथी पहुंचे, ऐसी युक्ति लगाओ जी ।
सत्य **धर्म** को **धर** ना है, ये बात बताए जी ।।१८।। दयानन्द ....


Scanned with CamScanner